श्राद्ध पक्ष :
1 सितम्बर से 17 सितम्बर तक

इस बार मना लें पितरों को वर्ना रुठ कर चले जायेंगें पितृलोक

इस बार श्राद्ध पक्ष संवत् 2076 भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा दिनाँक 1, मंगलवार से आरम्भ होगा एवं आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी दिनाँक 17 सितम्बर 2020, गुरूवार को समाप्त होगा।

न तंत्र वीरा जायन्ते निरोगो न शतायुषः। न च श्रेयाधि गच्छन्ति यत्र श्राद्ध विवार्जितम्।।

अतः जहां परिवारों में श्राद्ध नहीं होता, वहां न तो वीर पुरूष ही जन्मते हैं व न ही निरोगी होते हैं और न ही शतायु होते हैं। कल्याण प्राप्ति भी नहीं कर पाते इसलिए श्राद्ध पितरों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि देने का पर्व भी है। श्राद्ध के माध्यम से पवित्र मन, पवित्र वचन व पवित्र कर्म से उन्हें तर्पण किया जाता है ताकि पितरों (पूर्वजों) आत्माएं प्रसन्न रहें व उन्हें शांति मिले। यदि हम उनके लिये श्राद्ध, कर्म-काण्ड आदि नहीं करेंगे तो उनको पुण्य लाभ प्राप्त नहीं होगा और वे कूपित होकर हमारे सामने भी परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। अतः आवश्यक है कि हमें पितृ दोष से मुक्त होना ही चाहिये। ग्रहों की कुदृष्टि से भी पितृ दोष प्राप्त होता है। द्वादश भाव पितृ दोष के लक्षण का आभास करवाता है। यदि द्वादश भाव में चंद्रमा हो और उस पर मंगल की दृष्टि पड़ती हो तब जातक को पितृ दोष प्राप्त होता है। पितृ दोष से जातक के समय पर कार्य संपन्न नहीं हो पाते हैं। मूल नक्षत्र में पैदा होने वाले व्यक्तियों को पितरों का सत्कार, प्रसाद अनेक कष्टों द्वारा प्राप्त होता है। कुल पितृ दोष ग्रस्त रहने पर, पूर्वजों द्वारा पितृ ऋण न चुकाने पर बालक अपंग पैदा होता है। यदि राहु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा तथा चंद्र की प्रत्यंतर दशा में चल रहे हों तब जातक को पितृ दोष से व्यापक कष्ट उठाना पड़ता है। इसी प्रकार कुण्डली में बहुत से विपरित योग होने पर जातक पितृदोष से ग्रसित हो जाता है। पितृ दोष के कुप्रभाव से बचने के लिये विभिन्न उपाय किये जाते हैं जिनमें श्राद्ध-तर्पण, तीर्थ यात्राएं आदि तो हैं ही साथ ही विभिन्न प्रकार की साधनाएं एवं प्रयोग किये जाते हैं जिनके सम्पन्न करने से पितृदोष से मुक्ति मिलती है। आईये जाने इन विलक्षण साधनाओं को...!!

1. पितृ दोष मुक्ति साधना-

जब व्यक्ति अपने अंतिम समय में होता है, तो एक क्षण ऐसा आता है जब वह तंद्रा में चला जाता है और चित्रगुप्त के द्वारा उसके जीवन का सारा लेखा-जोखा उसकी आंखों के सामने चलचित्र की भांति तैर जाता है...

चलचित्र यानि वे घटनाएं भी, जो उसके सिवा किसी और को नहीं पता होती है, उसकी गोपनीय से गोपनीय बात भी चित्र में स्पष्ट हो जाती है...

और इन विभिन्न कर्मों में से वह अगले जीवन के लिए कर्म चयन करता है..

अधिकतर छल, झूठ, कपट, काम, भय, ईर्ष्या आदि से प्रभावित होता हुआ ही व्यक्ति देह त्यागता है...स्व चिंतन, भगवत् चिंतन का उसे ध्यान नहीं रहता।

कहा गया है, कि- 'अन्ते या मतिः सा गतिः' अंत समय में जैसे विचार एवं चिंतन होते हैं, उसी हिसाब से व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है। जब व्यक्ति विभिन्न इच्छाओं के साथ मरता है, तो कुछ देर तो उसे विश्वास ही नहीं होता, कि वह मर गया... उसकी देह उसके समक्ष होती है और वह अचंभित-सा देखता रहता है, क्योंकि उसकी कई अपूर्ण इच्छाएं होती है, जिनकी पूर्ति के लिए उसे भौतिक शरीर की आवश्यकता होती है, इसलिए वह अपनी देह के आसपास ही मंडराता रहता है और जब देह जला दी जाती है, तो हताश हो जाता है और इच्छाओं की पूर्ति हेतु भटकता रहता है।

अब या ऐसे समय में कोई सशक्त मार्गदर्शक हो, जो उस आत्मा का **मार्गदर्शन कर उसे आगे की ओर बढ़ाएं या फिर आप उसे प्रिय होने के नाते अपने आत्मीय के लिए कुछ ऐसा करें, कि उसका सही मार्गदर्शन हो सके और वह आगे के**

मृत्यु के बाद जीव कहाँ जाता है

प्रत्येक जीव की स्व–स्व कर्मानुसार विभिन्न गति होती है यही कर्म विपाक का सर्वतंत्र सिद्धान्त है। मुख्यतः जिसमें प्राणी जीवात्व भाव से छूट कर जन्म–मरण के प्रपंच से सदा के लिए छूट जाय और दूसरा कर्मानुसार स्वर्ग नरक आदि लोकों को भोग कर पुनरपि मृत्युलोक में जन्म धारण करे।

कर्मों में प्रवेश कर सकें।

आत्माएं भौतिक सामग्री नहीं खा सकती, वे तो मात्र उनकी गंध ग्रहण करती है। ठीक उसी प्रकार वे आपकी बातों को सुनकर अच्छी या बुरी तरंगें ग्रहण कर सकती है...अतः आपको चाहिए, कि अपने दिवंगत प्रिय के नाम का संकल्प लेकर, उसके लिए ऐसी दिव्य साधना संपन्न करें जिसके मंत्रों की तेजस्वी तरंगें उसे सीधी प्राप्त हो सकें...उसका सही मार्गदर्शन हो सके...वह इधर-उधर न भटके और जल्दी से जल्दी अपनी इच्छा के अनुरूप योनि में उत्पन्न हो सके...

पित्तरों के लिए पूजन या साधना संपन्न करने के दो मुख्य लाभ हैं- प्रथम, आपके पूर्वज या पितृ के कारण ही आपको यह भौतिक शरीर की प्राप्ति हुई है, यह मानव देह प्राप्त हुई है, अतः यह आपके ऊपर उनका ऋण है, पितृ ऋण है, और अगर आप साधना के माध्यम से उनके पुनर्जन्म का मार्ग प्रशस्त करते हैं, तो इस ऋण से और पितृ कोप से बच जाते हैं और अपने आप में हल्का और सुखी अनुभव करते हैं।

दूसरा, जब तक पितृ का पुनर्जन्म नहीं होगा, उसका सही मार्गदर्शन नहीं होगा, उनकी इच्छाएं अतृप्त रहेंगी। इस दशा में उसे देह की तलाश रहती है, जिसकी मदद से वह इच्छाओं को भोग सके और चूंकि उसी के संस्कार आपके शरीर में है, अतः वह आत्मा अपने द्वेष, क्रोध, काम, मोह, आदि को आसानी से (अपनी विभिन्न कामनाएं) आप पर प्रक्षेपित कर सकती है, जिसके फलस्वरूप आलस्य, प्रमाद, काम, क्रोध, लालच की मात्रा बढ़ जाती है और आप समझ नहीं पाते कि यह क्या हो रहा है?

परन्तु आप साधना द्वारा उसे यदि नवीन जन्म दिलवा दें, तो अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए उसे देह मिल जाएगी, वह पुराने संस्कारों को भूलकर नए संस्कारों के अनुसार जीवन जीने लगेगा...और आप भी उनके कुप्रभावों से मुक्त हो जायेंगे।

इसके अलावा नवीन देह देने के लिए आपके पूर्वज जो आपको आशीर्वाद देंगे, वह तो अपने आप में ही अनिर्वचनीय होगा, क्योंकि तब आप अपने जीवन में दिनों-दिन प्रगति की ओर अग्रसर हो सकेंगे, और जीवन में हर प्रकार की श्रेष्ठता, धन, वैभव, एवं सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

है न कितना अद्वितीय प्रयोग...पितृ ऋण एवं प्रकोप से मुक्त हुए, उनके व्यक्तिगत संस्कारों के प्रभाव से भी मुक्त हुए एवं उनका दिव्य आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन में उच्च स्थिति पर भी पहुंचे...यह भी हमारे ऋषियों की अद्वितीय व्यवस्था है। किसी कार्य को इस प्रकार से संपन्न करने का तरीका, जिसमें किसी एक का लाभ न होकर सर्वजन हिताय की स्थिति बन सके।

हमारे शास्त्रों में पितृ दोष निवारण से संबंधित कई विशिष्ट साधनाएं उल्लिखित हैं उनमें से मुख्य है 'पितृ मुक्ति साधना' जो कि अत्यधिक तीव्र है और तुरंत प्रभाव देती है।

यह साधना जहां हाल ही में दिवंगत लोगों के लिए उपयोगी है, तो वहीं उन पूर्वजों के लिए भी उपयुक्त है, जो बहुत पहले मृत्यु को प्राप्त हुए हैं।

साधना विधान-

यह साधना श्राद्ध पक्ष में अपनी सुविधानुसार किसी भी दिन प्रातः काल संपन्न करें। यह एक दिवसीय साधना है, और इसमें 'पितृ मुक्ति यंत्र', दिव्य माला एवं 'प्रायण गुटिका' की आवश्यकता होती है। साधक ब्रह्म मुहूर्त्त में उठे और सफेद धोती पहन कर दक्षिणाभिमुख हो सफेद आसन पर बैठे।

साधक को चाहिए, कि अपने सामने सफेद वस्त्र पर 'पितृ मुक्ति यंत्र' स्थापित करें, उसके चारों ओर दिव्य माला को रखें। कुंकुम से पितृ या पितरों का नाम या दिवंगत व्यक्ति का नाम यंत्र पर लिखें। अगर साधना सभी पितरों के लिए कर रहे हों, तो 'सर्व पितृ' लिखें।

यंत्र और माला का पूजन करें, यंत्र पर 'प्रायण गुटिका' स्थापित करें और उसका भी पूजन करें। 'दिव्य माला' निम्न मंत्र की पूरे श्राद्ध पक्ष में या एक ही दिन में 21 मालाएं जप करें-

मंत्र-।। ॐ क्रीं क्लीं ऐं सर्वपितृभ्यो स्वात्म सिद्धये ॐ फट्।।

साधना से पूर्व संकल्प में पितृ या पितरों के नाम अवश्य और यंत्र पर भी नाम अंकित करें। साधना समाप्ति के उपरान्त किसी शिव मन्दिर में उचित दक्षिणा, फल, पुष्प के साथ यंत्र, माला एवं गुटिका समर्पित कर दें अथवा जलाशय में अर्पित कर दें।

2. कैसे करें पितरेश्वर साधना-

धर्म, साधना एवं शास्त्रों में रुचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कोई भी श्रेष्ठ शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पहले अपने पूर्वज पितरेश्वरों का ध्यान अवश्य करता है, लेकिन यह स्थिति ही पूर्ण नहीं है, उन्हें पूर्ण रूप से अपने अनुकूल बनाकर प्रत्येक कार्य में सहयोग प्राप्त करने हेतु विशेष प्रयत्न की आवश्यकता रहती हैं। शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध दिवसों को शुभ कार्यों के अनुकूल नहीं माना जाता है, इस समय वायु की गति एक विशेष प्रकार की रहती है, आकाश में तारा-मण्डलों का एक विशेष समूह बनता है, और यह सिद्ध हो चुका है कि इस समय पूर्वज पितरेश्वर सूक्ष्म शरीर से इस पृथ्वी लोक पर अपनी पूर्ण गति से विचरण करते हैं, यदि इस समय कोई साधक पूर्ण विधि-विधान सहित पितरेश्वर साधना करें, तो उसे अन्य समय की अपेक्षा सरलता से सफलता प्राप्त हो सकती है।

अनन्तश्राचस्मि नागानां रूणोयादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संमयतामहम्।।

स्वयं त्रिलोकधारी, क्षीरसागर वासी, शेषसय्याधारी भगवान कहते हैं कि पितरों के सर्वश्रेष्ठ पितर 'मर्यमा पितर' वे ही हैं, प्रेतों पर शासन करने वाले यमराज भी वे ही हैं, उन्हीं की कृपा प्राप्ति से निराकारी अदृश्य अंश प्रेत योनि से मुक्त होकर पितर बन जााते हैं। प्रेत योनि में रहने वाली आत्मा पितर योनि में पहुँच जाती है और तब से वे पितर देव कहलाने लग जाते हैं। यमराज प्रेतों के

जिन व्यक्तियों की जन्म कुण्डली में सूर्य एवं राहु एक साथ हो, चन्द्र एवं राहु एक साथ हो, सूर्य एवं केतु एक साथ हो, चन्द्र एवं केतु एक साथ हो, गुरु एवं राहु एक साथ हो, गुरु एवं केतु एक साथ हो ऐसे व्यक्तियों को पितृ दोष से संबंधित उपाय अवश्य करने चाहिये, ऐसा करने से अगले वर्ष तक उन्हें शांति मिलेगी एवं कार्य व्यवसाय में परेशानियाँ कम आयेंगी। यदि और कुछ कर सकें तो आपको उपरोक्त युति का संयुक्त पेंडल बनवाकर इस श्राद्ध पक्ष में धारण कर लेना चाहिये।

राजा हैं, उन्हें दण्ड देने के वे अधिकारी हैं। सभी प्राणियों के मृत्युलोक में किए गए कर्मों का लेखा उनके पास रहता है। यमराज उसके कर्मों को ध्यान में रखते हुए उस आत्मा को नरक लोक में रखते हैं और उसको दंडित करते हैं। पातालाधिपति यमराज द्वारा पीड़ित आत्मा अपने प्रायश्चित् के लिए लालायित रहती है। परंतु वे अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना स्वयं नरक लोक में नहीं कर पाते हैं। यमराज भी वैकुण्ठधारी भगवान के ही अंश है। अतः यहां पर प्रभु प्रेतों को सजा देने के अपने कर्म से विवश हैं। यहाँ पर वे प्रेतों द्वारा की गयी क्षमा-याचना, प्रार्थना को न सुनने, न मानने के लिए विवश हैं। परंतु प्रभु का वैकुण्ठधारी अंश जो सदा सतगुणी है, क्षमाशील है। प्रेतयोनि को प्राप्त होने वाले व्यक्तियों के लिए मृत्यु लोक पर उनके पुत्रों द्वारा की गई प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार करते हैं और उन्हें प्रेत योनि से मुक्ति दिला कर पितर योनि में पहुँचा देते हैं।

पुत्र द्वारा पितृ श्राद्ध करने से पिता माता और पूर्वज प्रेत योनि से मुक्ति पाकर पितृ योनि प्राप्त करते हैं, पुत्र उनके लिए पितृदेव से स्वयं क्षमा-याचना कर उनके द्वारा किए गए पापों के लिए क्षमा-याचना कर, स्वयं द्वारा किए गए पापों के लिए नजर अंदाज करने व पुनः उनकी पुनरावृति न करने के लिए, याचक बनकर प्रार्थना करता है व श्रेष्ठ पितृदेव 'मर्यमा पितर' उनकी याचना सुनकर उनके पूर्वजों का पितृ लोक में आगमन स्वीकार करते हैं। मर्यमा पितर भगवान विष्णु के अंश तथा पितृलोक के अधिपति हैं। रूद्र, ब्रह्मा, मर्यमा, यम, वरूण आदि सभी देव भगवान विष्णु के ही अंश हैं और ये सभी उनको सौंपे गए कर्मों को करने को विवश हैं और साथ ही साथ अपनी सीमाओं में रहने को विवश हैं। पुत्र द्वारा भी सांसारिकताओं को निभाते हुए अनेक पाप-पुण्य हो जाते हैं। उनको मनुष्य स्वयं नहीं तौल पाता है। यमलोक में उनकी नाप तौल है। अतः उसे भी स्वयं को प्रेतलोक से मुक्ति पाने के लिए पुत्र की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया का पुनरावर्तन मृत्युलोक में उनके पुत्रों द्वारा किए जाने पर उनके पितरों को मर्यमा पितर पितृ लोक की शांति प्रदान करते हैं और वे स्वयं भी पितृ ऋण से मुक्त हो जाते हैं।

क्रोध, लोभ से रहित किए गए पितृ श्राद्ध द्वारा प्रेत योनि सुगमतापूर्वक प्राप्त होती है। पितृ योनि प्राप्त करने के पश्चात्, पुत्र की मृत्यु के उपरांत पुत्र द्वारा पितृ को तर्पण दिया जाना समाप्त हो जाता है। अब पितृलोक में पितृ अपने पूर्व वांछनीय कर्मों के संतुलन को पक्ष व विपक्ष में पाते हुए इस जन्म व मृत्यु के आवागमन में पुनः शामिल हो जाता है इस आवागमन में भिन्न-भिन्न योनियों की प्राप्ति वह अपने पूर्व कर्मों के आधार पर करता है।

स्लिवाथ पुरूषः कश्चिदिष्टस्यकुरूतेक्रियाम्
।
अनाथ प्रेत सस्कारात्कोटियज्ञ फलं भवेत।।
पितुः शतगुणं पुण्यं सहस्त्रं मातु रूच्यते।
भगिन्या दश साहस्त्रं सोदर्येदतमक्षयम।।

पुत्र अपने पिता माता तथा पूर्वजों द्वारा किए गये पापों के लिए श्राद्ध विधि द्वारा तथा स्तुतिपूर्ण मंत्रों द्वारा शास्त्रोक्त पद्धतिनुसार उन्हें यमलोक से छुड़ाकर पितृ ऋण से उऋण होकर पितृ प्रसाद ग्रहण कर तथा उनके पितृ लोक में स्थान पाने से उनको प्राप्त शक्ति द्वारा स्वयं को कृपायुक्त बनाकर अपने वंश की वृद्धि करता है। यशस्वी, धनवान तथा कीर्तिवान बनाता है। इस प्रकार किए गए अन्त्येष्टि कर्म द्वारा पिता-माता व पूर्वजों को तृप्ति तथा पुत्र को फल की प्राप्ति होती है।

प्रयोजन- इस साधना के सम्पन्न करने से पितृ दोषों से मुक्ति मिलती है। पितरों के क्रोध का शमन होता है और उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। यदि पितरों को शान्ति नहीं मिलती है तो वे भी क्रोधवश हमारे सामने विभिन्न समस्याएं खड़ी कर देते हैं। इस साधना से पितरों को शान्ति एवं नारकीय जीवन से मुक्ति मिलती है। मोक्ष की प्राप्ति होती है और वे प्रसन्न होकर हम पर आशीर्वाद रूपी फूलों की वर्षा करते हैं। हमारी सफलता में सहायक बनते हैं।

साधना विधि-

यह साधना श्राद्ध दिवसों में की जाने वाली साधना हैं इसमें प्रथम दिवस का विशेष महत्व है, प्रथम दिवस से पितरेश्वरों का आह्वान कर उन्हें स्थापित किया जाता है और प्रतिदिन निश्चित संख्या में मन्त्र जप एवं पूजन कर सिद्ध किया जाता है, जिससे कि वे अनुकूल होकर उसे अपने संरक्षण में ले लेते हैं। इस साधना में कुछ विशेष प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती है, जिनके बिना यह साधना पूर्ण नहीं हो सकती है। इस साधना की सामग्री 'पंच मुखी रूद्राक्ष', 'ग्यारह तांत्रोक्त नारियल' पितृदोष निवारक यंत्र, ताम्रपत्र, चावल, तिल, केसर, श्वेत वस्त्र, दूध, घी, शहद, चांदी का बना सर्प, तुलसी पत्र आवश्यक हैं।

श्राद्ध के प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें। यह साधना सूर्योदय के साथ ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए, इस हेतु आवश्यक है कि प्रातः अत्यन्त जल्दी उठ कर सभी सामग्री की व्यवस्था एवं स्नान इत्यादि कर अपने पूजा स्थान को शुद्ध कर साधना क्रम के अनुसार सामग्री रख दें।

अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछाकर पंचमुखी रुद्राक्ष के चारों ओर एक घेरा बना दें, उसके पश्चात इस रुद्राक्ष के आगे क्रम वार चावलों की ढेरी पर 'ग्यारह तांत्रोक्त नारियल' स्थापित करें और पितृदोष निवारक यंत्र को भी रुद्राक्ष के साथ स्थापित कर दें। एक और घी का दीपक अवश्य जला दें। अपने आसन के नीचे छोटा चांदी का सर्प स्थापित कर दें, जिससे कि किसी भी प्रकार के भूत-पिशाच आदि आपको हानि नहीं पहुँचा सकें।

एक बच्चा जलते हुए दिये को बड़ी मोहक दृष्टि से देख रहा था, घर ठहरे मेहमान ने पूछा-मुन्ने, यह प्रकाश कहाँ से आया? बच्चे ने उत्तर दिया ''भगवान के घर से''?

अतिथि ने जिज्ञासा जतलाई, अच्छा तुम भगवान को जानते हो। अच्छा बताओ वह कहाँ रहता है? बच्चे ने एक क्षण मस्तक पर कनिष्ठा रखी और दीपक को बुझाते हुए कहा-''यह प्रकाश जहाँ चला गया वहाँ!''

बच्चे की सरलता ने स्पष्ट किया-अदृश्य प्रकाश के रूप में वही तो कण-कण में विद्यमान है।

की ओर मुँह कर जल की अंजली दें, तथा पितरेश्वरों के आगमन हेतु प्रार्थना करें। इसके साथ ही प्रत्येक अंजली के साथ निम्न मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ लं नमः, ॐ वं नमः,
ॐ रं नमः, ॐ यं नमः

इसके पश्चात् बिना किसी ओर देखे, सीधे पूजा स्थान में अपना आसन ग्रहण करें तथा निम्न ध्यान मंत्र का पाँच बार जप करें। प्रथम बार जप करते हुए, 'पंच मुखी रूद्राक्ष' पर घी मिला कर तिल अर्पित करें तथा यह क्रिया क्रम पांच बार दोहराऐं-

शरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं पुरूषार्थसाधनंपितरेश्वराराधनयोग्यं ध्यात्वा तस्मिन् शरीरःसर्वात्मकं सर्वज्ञ सर्वशक्तिसमन्वितं पितरेश्वरामयं आनन्द स्वरूपं भावयेत्।।

इस प्रकार शुद्ध मन से किये गये इस ध्यान से पितरेश्वर अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। अपनी भावनाओं को पूर्णरूप से प्रकट करते हुए उनसे हर दृष्टि से सहयोग प्राप्ति की इच्छा प्रकट करें, क्योंकि ये पितरेश्वर आपके अपने हैं। इसके पश्चात् सामने रखे हुए तांत्रोक्त नारियलों का चारों ओर इस प्रकार अर्द्ध चन्द्रकार घेरा बना दें और प्रत्येक तांत्रोक्त नारियल पर केसर, पुष्प, घी, तुलसी पात्र अर्पित करें। यह लघु नारियल प्रयोग इस साधना में अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह अर्द्ध चन्द्राकार स्थिति लक्ष्मण रेखा है, जो कि पितरेश्वरों को स्थायी रूप से आपके यहाँ स्थापित कर देती हैं।

इसके पश्चात 'रूद्राक्ष माला' से पितरेश्वर बीज मंत्र का जप करें, इस साधना में जो माला प्रयोग में लाई जाये, वह किसी दूसरी साधना में प्रयोग में नहीं ली जा सकती हैं, इस बात का ध्यान रखना विशेष आवश्यक है।

।ॐ सर्व पितृ प्रं प्रसन्नों भव ॐ।

यह प्रभावकारी बीज मंत्र परम विस्फोटक शक्ति लिए है और इसकी पाँच मालाएँ उसी स्थान पर बैठे-बैठे जप करें।

इस प्रकार प्रत्येक दिन पूजा विधान में बीज मंत्र की पाँच माला का जप करना ही है, जब श्राद्ध दिवस पूर्ण हो जाये तो ये सभी सामग्री काले वस्त्र में बांध कर किसी जल धारा में या तालाब में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है और इसके कारण आपको जीवन में अपने पूर्वजों का ऐसा मार्गदर्शन, सहयोग एवं शक्ति प्राप्त हो जाती है जिनके कारण आपका जीवन एवं व्यक्तित्व शक्तिमान हो जाता है। श्राद्ध दिवसों में अपने पितरेश्वरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने हेतु साधक को यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना सामग्री- पंचमुखी रुद्राक्ष, 11 तांत्रोक्त नारियल, पितृदोष निवारण यंत्र, रुद्राक्ष माला।

3. गृहस्थ सुख श्राद्ध प्रयोग-

(1) सामग्री- जलपात्र, घी का दीपक, लघु नारियल, अगरबत्ती तथा दूध की बनी मिठाई का भोग आपकी इच्छा के अनुसार। (2) माला- मूंगे की माला, (3) समय - सांय काल, (4) आसन- ऊनी आसन, श्वेत रंग का हो तो श्रेष्ठ है। (5) दिशा- पश्चिम दिशा, (6) जप संख्या- नित्य 3, 7, या 11 माला (7) अवधि-11 दिन।

प्रयोग विधि-

सायंकाल के समय स्नान कर धोती या स्वच्छ वस्त्र पहन कर सामने मिट्टी के एक पात्र में रेत डालकर उसमें गेहूँ या किसी भी प्रकार का धान बो दें तथा नित्य इसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें, जिससे कि धान उग जाये। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर काले तिल की ढेरी बनाकर उस पर लघु नारियल स्थापित कर दें। यह लघु नारियल लगभग एक-दो इन्च के आस-पास होता है। बाजार में जो नारियल मिलते है वे नारियल प्रयोग में नहीं लें। इसके बाद दीपक व अगरबत्ती जलाकर निम्न मंत्र का 108 बार जाप करें।

मंत्र- ॐ श्रीं सर्व पितृ दोष निवारणाय क्लेश हन हन सुख-शांति देहि देहि फट् स्वाहा।

नित्य दूध का बना प्रसाद भोग लगावें और नित्य मंत्र जप के बाद पश्चिम दिशा की तरफ वह भोग छत या मैदान में फैंक दें।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक प्रयोग करें और जिस पात्र में धान बोया था, उस पात्र में थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें। इस प्रकार जब प्रयोग समाप्त हो जाये तब बारहवें दिन उस मिट्टी के पात्र को किसी नदी या तालाब या पवित्र जल स्थान में विसर्जित कर दें और वह लघु नारियल अपने घर के पूजा स्थान में रख दें। इस प्रकार प्रयोग करने से पितृ दोष से राहत मिलती है और घर में सुख-शांति स्थापित हो जाती है। गृह-क्लेश, मानसिक तनाव, व्यापारिक अड़चने, जीवन में आ रही नित-नई समस्याएं इस प्रयोग को सम्पन्न करने से स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं क्योंकि एक तो पितृदोष से मुक्ति मिलती है और साथ ही पितर भी प्रसन्न होकर शुभ आशीर्वाद और अन्य लाभ देते है।

4. पितृ दोष निवारण प्रयोग-

कभी-कभी देखने में आता है कि अकारण ही घर की शांति नष्ट हो जाती है, व्यापार में उन्नति नहीं, संतान सुख का अभाव एवं एक न एक विपदाएं खड़ी रहती हैं, तब ज्योतिषी आपको राय देता है कि कुण्डली में पितृ दोष है, उस अवस्था में आप यह प्रयोग अवश्य करें। आप दोष मुक्त होंगे।

मंत्रः- ॐ श्रीं सर्व पितृ दोष निवारणाय क्लेश
दन दन सुख शांति देहि देहि फट् स्वाहा।

सर्वपितृ अमावस्या के दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पहले उठकर स्नानादि से निवृत होकर पश्चिम दिशा में मुख रख सकें इस प्रकार आसन लगाकर बैठे। सामने पट्टे/बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर एक थाली में कुंकुम से त्रिकोण बना दें। त्रिकोण के तीनों कोनों पर एक-एक लघु नारियल रख दें एवं बीच में राहु यंत्र स्थापित कर दें। सभी की यथाविधि पूजा करें, कुंकुम, चावल, अक्षत, नैवेघ आदि अर्पित कर उपरोक्त मंत्र की 3 माला जपें। लघु नारियलों एवं राहु यंत्र को किसी नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न करने से घर में से पितृ दोष से राहत मिलती है।

सामग्री- 3 लघु नारियल, राहु यंत्र।

5. अकालमृत्यु ग्रस्त की मुक्ति के लिये प्रयत्न-

भारतीय सनातन धर्म में अस्वाभाविक मृत्यु को निम्नतम माना गया है, क्योंकि इसमें व्यक्ति ईश्वर प्रदत्त पूर्ण आयु का उपभोग नहीं कर पाता है और किसी दुर्घटनावश उसकी मृत्यु हो जाती है, इस प्रकार अस्वाभाविक मृत्यु प्राप्त आत्मा के मन में जो इच्छा होती है, उसकी पूर्ति के लिये वह भटकती रहती है। ऐसे में उसके आत्मीय होने के नाते हमारा कर्त्तव्य बन जाता है, कि उसकी इच्छा पूर्ण करें और प्रयत्न द्वारा उसका भटकाव समाप्त करें और उसे आगे के जीवन के लिए अग्रसर करें।

यह साधना विशेषतः उन आत्मीय जनों के लिए है, जिनकी

उसे यह साधना अवश्य संपन्न करनी ही चाहिए, क्योंकि यह सामान्य श्राद्ध की क्रिया से बिल्कुल अलग ही प्रभाव देने वाली है और इससे मृत व्यक्ति को शांति प्राप्त होती है तथा उनका उद्धार होता है।

साधना विधान-

यह साधना पितृपक्ष में 1 सितम्बर 2020 से 17 सितम्बर 2020 तक किसी भी दिनांक को अपनी सुविधानुसार प्रारंभ करनी चाहिए। यदि सूर्यास्त से पूर्व हो जाये तो अच्छा है। यह भी एक दिवसीय साधना है। इसमें 'अस्वाभाविक मृत्यु दोष निवारण यंत्र', 'इच्छा पूर्ति फल' एवं 'मुक्तिदायिनी माला' की आवश्यकता होती है।

साधक स्नान कर सफेद वस्त्र पहिन कर सफेद आसन पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठें। सफेद वस्त्र पर 'अस्वाभाविक मृत्यु दोष निवारण यंत्र' और उसके ऊपर माला स्थापित करें।

माला की स्थापना से पहले यंत्र पर मृत व्यक्ति का या व्यक्तियों का नाम कुंकुम से लिखें। फिर यंत्र व माला का पूजन करें, यंत्र पर 'इच्छा पूर्ति फल' चढ़ावें और उसका पूजन करें। इसके बाद 'मुक्तिदायिनी माला' से निम्न मंत्र की 5 मालाएं जप करें-

मंत्र-।। ॐ ह्रां ह्रीं सः ऐं ॐ फट्।।

साधना समाप्त होने पर समस्त पूजन सामग्री किसी नदी, नाले, तालाब, या कुंए आदि में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से यह प्रयोग संपन्न होता है तथा मृत व्यक्ति को शांति प्राप्त होती है और वह किसी अन्य योनि में भटकने के स्थान पर जन्म लेने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर ५१है।

न्यौछावर राशि प्रयोगों के क्रमानुसार ही दी गई है :

1. **साधना सामग्री न्यौछावर**– 1551/-
2. **साधना सामग्री न्यौछावर**–2151/-
3. **साधना सामग्री न्यौछावर**– 751/-
4. **साधना सामग्री न्यौछावर**– 1551/-
5. **साधना सामग्री न्यौछावर**– 1551/-

उपरोक्त प्रयोगो को अपनाकर आप अपने जीवन में आ रही समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं और जीवन में खुशहाली ही खुशहाली ला सकते हैं। विभिन्न प्रकार की समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं। अपने जीवन में सुख-समृद्धि और ऐश्वर्य को स्थायी स्थान दे सकते हैं। तो फिर देर किस बात की इस बार अवश्य प्रसन्न करें अपने पितरों को।

नोटः- प्रयोगों की सामग्री प्राप्त करने के लिये पत्रिका कार्यालय पर फोन पर संपर्क करें। 0291-2618625, 2621625, 2615625

दशावतार विष्णु कवच

रामो भूत्वा रामम् यजेत्, कृष्णो भूत्वा कृष्णम् यजेत्।
विष्णो भूत्वा विष्णूम् यजेत्, शिवो भूत्वा शिवम् यजेत्।।

यानि जिस देवता की मनुष्य पूजा उपासना करता है उसमें पूर्णतः या अंशात्मक रूप में, व्यक्तित्व में, व्यवहार में उस देवता की छवि विकसित हो जाती हैं।

जिस प्रकार भगवान विष्णु ने दशावतार रूपों में पृथ्वी पर अवतरित होकर साधारण मनुष्य की तरह जीवन जीया एवं उन-उन अवतारों में जिस प्रकार एक मावन सुख-दुःख, हर्ष, विशाद की अनुभूति करता हैं उसी प्रकार उन अवतार रूपों में उन्होंने भी समस्त भावनाओं को जिते हुए एक साधारण मनुष्य की तरह अपने दुःखों पर, अपनी समस्याओं पर विजयी प्राप्त की। इस कवच का निर्माण इन्हीं दस अवतारों की विशिष्टताओं को चुन-चुन कर एकत्रित कर निर्मित किया गया है जिसे धारण कर धारक का भी उन विशेषताओं का गुणात्मक रूप में विकास हो सके एवं जिस सहिष्णुता से उन्होंने अपने दुःखों, कष्टों, विशादों पर विजयी प्राप्त की उसी प्रकार एक आम आदमी भी अपने जीवन में व्याप्त समस्याओं पर उसी साहस, सहिष्णुता व धैर्य से विजयी प्राप्त कर सकें।

कवच न्यौच्छावर दक्षिणा 3500 रू.

दाम्पत्य सुख शान्ति पैकेट

कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर भी व्यक्ति चाहे तो स्वर्ग सा जीवन बिता सकता है। लेकिन स्वर्ग सा जीवन जीने और बिताने के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता होती है पारिवारिक सुख की। पारिवारिक सुख यानी की आपका दाम्पत्य जीवन। यदि व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है तो फिर उसके पास सबकुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है। दाम्पत्य सुख का सम्बन्ध अमीरी या गरीबी से नहीं है। गरीब व्यक्ति भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहकर अत्यन्त सुख और आनन्द की अनुभूति करता है वहीं कोई धनवान व्यक्ति सर्वस्व भौतिक सुख सुविधाओं के होते हुए भी पत्नी और बच्चों के साथ सम्बन्ध अच्छे ना होने पर दुःखी जीवन व्यतीत करता है। इसीलिये कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने घर में सुखी है वह संसार में सुखी है और जो व्यक्ति घर में दुःखी है उसके लिए सारा संसार बेगाना है। देखा जाये तो आज के समय में वे ही लोग भाग्यशाली हैं जो दाम्पत्य जीवन के सुख को भोग रहे हैं अन्यथा जगह-जगह लोग गृहक्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं। किसी की पत्नी सही नहीं है तो किसी के बच्चे कहने पर नहीं है, किसी की अपने पिता से नहीं बनती तो किसी के माता से मतभेद हैं। यदि आप अपने जीवन में दाम्पत्य सुख का पूर्ण लुत्फ उठाना चाहते हैं तो स्थापित कीजिए दाम्पत्य सुख शांति पैकेट और बना लीजिए अपने घर-संसार को स्वर्ग सा सुंदर।

1. क्या आपका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है?
2. क्या आप दोनों के बीच वैचारिक मतभेद है?
3. क्या आप गृह क्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं?
4. क्या परिवार में अशान्ति का वातावरण है?
5. आपकी पत्नी या पति कहा नहीं मानते हैं?

आप भी उपरोक्त समस्याओं से त्रस्त हैं तो यह पैकेट आपके लिये विशेष उपयोगी है–

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1. मातंगी यंत्र 2. आम की लकड़ी का स्वास्तिक 3. जप माला 4.देवी यंत्र पैण्डल 5.मनसा वाचा पिरामिड 6.वास्तु यंत्र 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

जन्म पत्रिका विश्लेषण

समय एक सा कभी नहीं रहता। ग्रह–नक्षत्र बदलते रहते है और परिस्थितियां भी। दशाएं अपना प्रभाव दर्शाती है तो आकाश में भ्रमण करने वाले ग्रह भी। जन्म कुण्डली एक स्थूल रुप है आपके जीवन का। समय–समय पर योग्य एवं विद्धान, अनुभवी ज्योतिषी की सलाह लेकर आप आने वाली कठिनाइयों, परेशानियों को पहले ही जानकार सावधान रह सकते है।

ज्योतिष के कई महायोग है जो व्यक्ति को जीवन की ऊँचाइयों पर पहुँचा देते है और कई दुर्योग भी है तो व्यक्ति की भरपूर मेहनत को सफल नहीं होने देते। समय पर उन्हीं का ज्ञान कर आप उचित उपाय कर सकते है जैसे रत्न धारण, ग्रहों का दान, यज्ञ, हवन, ग्रहों के मंत्र–स्तोत्र जाप, ग्रहों के यंत्र, कवच पाठ एवं कवच धारण आदि के द्वारा।

''भाग्य से अधिक और समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता'' इस सिद्धान्त के सहारे जीवन को नर्क मत बनाइये। अपने जीवन को एक दर्पण की तरह देखिये ज्योतिष के माध्यम से। अपनी समस्याओं के समाधान को जानिये। समस्याओं से, अभावों से सदैव जूझते ही मत रहिये अपितु ज्योतिष द्वारा उनका समाधान पाइये। जीवन को सुखद एवं सफल बनाइयें। कोई भी ज्योतिषी भविष्यवाणी नहीं करता, बल्कि ग्रह स्वयं बोलते है, आवश्यकता है उनकी भाषा समझने की।

मंत्र–तंत्र–यंत्र भारत की प्राचीन विद्याएँ है जिन पर हमारे ऋषि–महर्षियों ने सैकड़ों वर्षो तक शोध किया और समस्याओं से मुक्ति के उपाय खोज निकालें। आज नौसिखिये ज्योतिषी या जो ज्योतिषी बनने का ढ़ोग करते है निःशुल्क फोन पर या टी.वी. चैनल पर या अन्य संचार माध्यमों से आपकी समस्याओं का तुरन्त उपाय बतला देते है और आपकी समस्याओं का हल नहीं निकलता उल्टे समय, श्रम और पैसा बर्बाद होता चला जाता है।

आप कौनसा व्यापार करें?किन शैयर्स में इन्वेस्ट करें?संतान को किस क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहिये?मुकदमों का निपटारा कब होगा?सबसे अच्छा समय कब आयेगा?प्रतिकूल समय कब तक चलेगा? यह ऐसे प्रश्न है जिनके लिये योग्य ज्योतिषी को भी कुण्डली विश्लेषण में समय लगता है तो कोई व्यक्ति कैसे आपको एक या दो मिनिट में ही समस्या का समाधान बतला सकता है। आप स्वयं सोचिये और निर्णय कीजिये सही मार्गदर्शन पाने का। किसी का अधूरा ज्योतिष ज्ञान आपके लिये घातक हो सकता है। यदि आपने सही रत्न नहीं धारण किया है तो वह भी आपको जहर के बराबर असर कारक होगा क्योंकि रत्न अमृत भी है तो जहर भी।

परम पूज्य गुरुदेव पं. कमल राधाकृष्ण श्रीमालीजी के सर्वाधिक लोकप्रिय टी.वी. कार्यक्रमों में आप सभी ने देखा होगा ''जन्मपत्रिका विश्लेषण''। जिसमें श्रीमालीजी देश–विदेश के समस्या ग्रस्त व्यक्तियों की कुण्डलियों का किस प्रकार विश्लेषण करते है। इस कार्यक्रम को देखकर हर व्यक्ति चाहता है कि उनकी समस्याओं का समाधान श्रीमालीजी स्वयं करें। जो श्रीमालीजी से सीधे नहीं मिल पाते हैं वे अपनी समस्याओं का समाधान सीधे घर बैठे भी प्राप्त कर सकते है।

जन्म पत्रिका विश्लेषण के लिये आपको क्या करना है-

आप अपनी समस्याओं के समाधान के लिये अपनी जन्म पत्रिका की फोटो कॉपी के साथ रू. 1500 का डिमान्ड-ड्राफ्ट/चैक पं. कमल श्रीमालीजी (**Payable at Jodhpur**) के नाम प्रेषित करें। आपका पत्र,, डी.डी. एवं साफ-साफ अक्षरों में लिखें 5.6 प्रश्नों का उत्तर आपके पते पर, फैक्स या ईमेल के माध्यम से शीघ्र से शीघ्र देने का प्रयास किया जायेगा।

सम्पर्क करें

विश्व तंत्र ज्योतिष

प्लॉट नं.–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक
कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर–342001 (राज.)
फोन : 0291–2621625, 2615625, 2440111/999
टेलीफैक्स : 0291–2618625

Email : tantravtj@gmail.com, Visit us : www.kamalshrimali.com Vishwa Tantra Jyotish Whats App. No.- 7073812210

खेल ग्रहों का, भविष्य आपका क्योंकि मनुष्य ग्रहों द्वारा नियंत्रित है, कोई उन्हें चुनौती देने का साहस नहीं कर सकता।